

रॉबर्ट वानॉय , निर्वासन से निर्वासन, व्याख्यान 10ए

1 शमूएल 1-14, शमूएल और राजत्व

समीक्षा

वी. सैमुअल ए की पुस्तकें। सामान्य रचना और नाम पर टिप्पणियाँ बी। मुक्ति के इतिहास में महत्वपूर्ण प्रगति सी। सैमुअल का जीवन 1. वंश और युवा ए। शमूएल का जन्म - 1 शमूएल 1:1-28

मैंने आपको पिछले सप्ताह रोमन अंक वी., "द बुक्स ऑफ सैमुअल" पर एक हैंडआउट दिया था। वीए "सामान्य रचना और नाम पर टिप्पणियाँ" है और बी "मोचन के इतिहास में महत्वपूर्ण प्रगति" है। हमने पिछले सप्ताह अपना सत्र समाप्त किया, जब हम मुक्ति के इतिहास में उन प्रगतियों को देख रहे थे जो हमें सैमुअल की पुस्तक में मिलती हैं। तो हम आज शाम की शुरुआत वीसी, "सैमुअल का जीवन" से करेंगे। 1. उसके अंतर्गत है "वंश और युवा।" मेरे यहां कुछ उप-बिंदु हैं जो आपकी रूपरेखा में नहीं हैं, लेकिन a. 1 के अंतर्गत "1:1-28 में शमूएल का जन्म" है।

1 शमूएल के अध्याय एक में, आपने एल्काना नाम के एक आदमी की बांझ पत्नी की कहानी पढ़ी, जिसने प्रभु से एक बच्चे के लिए प्रार्थना की और वादा किया कि यदि प्रभु उसे बच्चा दे देते हैं, तो वह उस बच्चे को प्रभु की सेवा में समर्पित कर देगी। . आपने पद 2 में पढ़ा कि एल्काना की दो पत्नियाँ थीं: एक का नाम हन्ना था, दूसरी का पनिन्ना। पनिन्ना के तो बच्चे थे परन्तु हन्ना के कोई नहीं था। आपने पद 5 में पढ़ा कि उसके पास कोई क्यों नहीं था। 5बी में आपने पढ़ा, "भगवान ने उसकी कोख बंद कर दी थी।" आपको वास्तव में 6ए में उस कथन की पुनरावृत्ति मिलती है: "... क्योंकि प्रभु ने उसकी कोख बंद कर दी थी, उसकी प्रतिद्वंद्वी - वह एल्काना की दूसरी पत्नी पेनिन्ना है - "उसे परेशान करने के लिए उसे उकसाती रही, और यह साल दर साल चलता रहा।" तो आप कल्पना कर सकते हैं कि हन्ना किस दयनीय स्थिति में रहती थी। इसलिए उसने एक बच्चे के लिए प्रभु से प्रार्थना की, और श्लोक 11 में उसने यह कहते हुए मन्त्रत मानी, " हे सर्वशक्तिमान यहोवा, यदि तू केवल अपने दास के दुःख पर दृष्टि करेगा और मुझे स्मरण करेगा, और अपने दास को न भूलेगा, परन्तु उसे एक पुत्र देगा, तब मैं उसे जीवन भर के लिये यहोवा को सौंप दूंगा, और उसके सिर पर कभी छुरा न चलाया जाएगा।" आप अध्याय में थोड़ा आगे जाते हैं और आप 19बी में पढ़ते हैं, " एल्काना ने अपनी पत्नी हन्ना के साथ सोए, और यहोवा ने उसकी सुधि ली। कुछ समय बाद हन्ना

गर्भवती हुई और उसने एक पुत्र को जन्म दिया। उसने उसका नाम सैमुअल रखा।”

1) सैमुअल का महत्व तो यह है सैमुअल के जन्म की कहानी। निस्संदेह, इस बिंदु से आगे चलकर सैमुअल, सैमुअल की कहानियों में एक प्रमुख व्यक्ति बन जाता है। वह वही है जिसे प्रभु ने इस्राएल में राज स्थापित करने के लिए खड़ा किया था, पहले इस्राएल के पहले राजा शाऊल का अभिषेक किया और फिर दूसरे राजा के रूप में दाऊद का अभिषेक किया। मैं सैमुअल और उसके महत्व के बारे में कुछ और टिप्पणियाँ कहना चाहता हूँ। वह निर्णायकों में अंतिम और महानतम हैं। 7:15 में आपने पढ़ा, "शमूएल जीवन भर इस्राएल का न्यायी बना रहा।" मुझे लगता है कि हम आम तौर पर सैमुअल को एक न्यायाधीश के बजाय एक भविष्यवक्ता के रूप में सोचते हैं, लेकिन उन्होंने उन दोनों कार्यों - पैगंबर और नागरिक नेता, या न्यायाधीश - को जोड़ दिया और दोनों कार्यों को अच्छी तरह से निभाया। जब आप अधिनियमों की पुस्तक को देखते हैं, तो 13:20 में शमूएल का एक संक्षिप्त संदर्भ मिलता है, जो कहता है, "इसके बाद परमेश्वर ने उन्हें शमूएल भविष्यवक्ता के समय तक न्यायाधीश दिए।" यह इज़राइल के इतिहास की इस अवधि का सारांश दे रहा है, और निश्चित रूप से आपके पास वे छह प्रमुख और छह छोटे पात्र हैं जिनका उल्लेख न्यायाधीशों की पुस्तक में किया गया है। और अब न्यायाधीशों की वह अवधि सैमुअल की पुस्तक के शुरुआती अध्यायों में ओवरलैप हो गई है।

वह वह भी था जिसे आप भविष्यवक्ताओं की पंक्ति में प्रथम कह सकते हैं। हमने व्यवस्थाविवरण 18 में उस भविष्यसूचक आदेश के बारे में बात की जहां प्रभु ने कहा था कि वह "मूसा के समान एक भविष्यवक्ता को खड़ा करेगा," और यह मूसा की मृत्यु के बाद इज़राइल के लिए दिव्य रहस्योद्घाटन के साधनों का संदर्भ प्रतीत होता है। पैगम्बरों की कतार थी। प्रेरितों के काम 3:24 को देखें: "वास्तव में शमूएल के बाद से जितने भविष्यवक्ताओं ने कहा, उन्होंने इन दिनों के बारे में भविष्यवाणी की है।" इसलिए, मूसा के बाद, ऐसा लगता है कि सैमुअल पुराने नियम के काल में उस भविष्यवाणी आंदोलन के शीर्ष पर या पहले स्थान पर खड़ा है।

ऐसा लगता है जैसे सैमुअल को पुराने नियम के काल में एक अत्यंत महत्वपूर्ण व्यक्ति माना जाता था। मुझे लगता है कि जब आज अधिकांश लोग पुराने नियम के महान पात्रों के बारे में सोचते

हैं, तो आप आम तौर पर इब्राहीम के बारे में सोचते होंगे, आप निश्चित रूप से मूसा के बारे में सोचते होंगे, और आप डेविड और शायद यशायाह के बारे में सोचते होंगे। लेकिन यिर्मयाह 15:1 को देखें। यिर्मयाह कहता है: “यहोवा ने मुझ से कहा, चाहे मूसा और शमूएल मेरे साम्हने खड़े भी हों, तौभी मेरा मन उन लोगों की ओर न लगेगा।” सैमुअल को काफी हद तक मूसा के बराबर रखा गया है। मुझे लगता है कि इसका कारण यह है कि मूसा और शमूएल दोनों ने परमेश्वर के लोगों के लिए मध्यस्थता की। याद रखें, मूसा ने उस सुनहरे बछड़े की घटना के बाद हस्तक्षेप किया था। सैमुअल ने भी बीच-बचाव किया। हम इसे अध्याय 7 में देखेंगे जब हम वहां पहुंचेंगे, जहां शमूएल की मध्यस्थता के परिणामस्वरूप प्रभु ने इस्राएलियों को पलिशतियों से बचाया था। इसलिए मूसा और सैमुअल के बारे में एक ही वाक्य में एक ही स्तर पर एक साथ बात की गई है, इसलिए वे निश्चित रूप से महत्वपूर्ण व्यक्ति हैं।

2) जन्म की घोषणा आइए अध्याय 1 पर वापस जाएँ जहाँ उसके जन्म की घोषणा की गई है। आप अध्याय में दो महिलाओं के बीच विरोधाभास देखते हैं। पेनिन्ना शांत और अहंकारी है क्योंकि वह हन्ना का दिखावा करती है। हन्ना स्थिति से पीड़ित और कुचली हुई है। जैसे-जैसे आप सैमुअल की किताबों में आगे बढ़ेंगे, आपको अनेक विरोधाभासों में से यह पहला विरोधाभास मिलेगा। अगले कुछ अध्यायों में हम शमूएल को एक धर्मात्मा व्यक्ति के रूप में विकसित होते देखेंगे, जो महायाजक एली के दुष्ट पुत्रों के विपरीत होगा। इसलिए हमें न केवल पेनिन्ना और हन्ना के बीच, बल्कि एली के बेटों और शमूएल के बीच भी विरोधाभास मिलता है। तब हमें शाऊल और दाऊद के बीच अंतर, और शाऊल और जोनाथन के बीच अंतर मिलता है। हमें शाऊल की बेटी मीकल और अबीगैल के बीच अंतर मिलता है जिससे डेविड ने बाद में शादी की। इसलिए इस पुस्तक की विशेषता उस प्रकार के अनेक विरोधाभास हैं।

इस उदाहरण में, अपने जन्म से पहले ही, सैमुअल अपनी उत्पीड़ित लेकिन धर्मपरायण माँ के माध्यम से सही और ईश्वरभक्ति के पक्ष में जुड़ गया। वह चित्र आपको यहाँ श्लोक 1-28 में मिलता है। तो वह है, "सैमुएल का जन्म।"

बी। हन्ना का गीत - 1 शमूएल 2:1-10 बी. "हन्ना का गीत" है, जो 1 शमूएल 2:1-10 में है। शमूएल के जन्म के बाद, हन्ना ने शमूएल को ले लिया, जैसा कि आप अध्याय 1 के छंद 27 और 28 में देखते हैं, और कहती है, " मैंने इस बच्चे के लिए प्रार्थना की, और प्रभु ने मुझे वह दिया जो मैंने उससे मांगा था। इसलिये अब मैं उसे यहोवा को सौंपता हूं। वह जीवन भर के लिये यहोवा को सौंप दिया जाएगा।' और उसने वहां यहोवा की आराधना की।" वह उसे शीलो में महायाजक एली के पास ले गई, जहां तम्बू और सन्दूक थे, और उसे यहोवा को सौंप दिया।

तब आपके पास 1 शमूएल 2:1-10 में हन्ना की प्रार्थना या गीत होगा। यह एक उल्लेखनीय कविता है। यह ईश्वर की स्तुति और धन्यवाद की महान प्रार्थनाओं में से एक है, जिसे आप संपूर्ण धर्मग्रंथ में पा सकते हैं। ल्यूक 1:46-55 में हन्ना के गीत के मूल विषयों और मैग्निफिट में मैरी के गीत के बीच अक्सर तुलना की गई है ; कुछ समानताएं हैं। आपने देखा कि गीत पद 1 में हन्ना की इस पुष्टि के साथ शुरू होता है कि प्रभु ने उसे कितना आशीर्वाद दिया है। वह कहती है, " मेरा मन यहोवा के कारण आनन्दित है; यहोवा के कारण मेरा सींग ऊंचा हुआ है। मैं अपने शत्रुओं पर घमण्ड करता हूं, क्योंकि मैं तेरे उद्धार से प्रसन्न हूं। उसकी प्रार्थना के उत्तर में भाग्य में उलटफेर हुआ है। भगवान ने उसे एक बेटा देकर एक महान कार्य किया है। लेकिन मुझे लगता है कि आप पद 2 में जो पाते हैं वह यह है कि उसकी खुशी का असली स्रोत सिर्फ व्यक्तिगत लाभ नहीं है, बल्कि वह स्वयं ईश्वर है। हन्ना अपने स्वयं के उद्धार को एक ऐसी चीज़ के रूप में देखती है जो प्रभु को गौरवान्वित करती है और उसे अपने दुश्मनों के प्रति प्रतिक्रिया के रूप में उसकी कृपा के लिए ईश्वर की प्रशंसा करने में सक्षम बनाती है। श्लोक 2 पर ध्यान दें। हन्ना परमेश्वर की महानता के गहन वर्णन के साथ परमेश्वर को संबोधित करती है। वह वही है जो पूर्णतः पवित्र है; प्रभु के समान कोई पवित्र नहीं है। वह ऐसा व्यक्ति है जो पूर्णतया अद्वितीय है; उसके अलावा कोई नहीं है। वह वह है जो परम शक्तिशाली है, हमारे परमेश्वर के समान कोई चट्टान नहीं है। इस प्रकार हन्ना समझ गई कि यहोवा ही परमेश्वर है; वह वह है जिसमें परमेश्वर के लोग शक्ति, शरण और सुरक्षा पा सकते हैं।

उन पहले तीन छंदों में, मुझे लगता है कि हन्ना मुक्ति के अपने अनुभव को एक उदाहरण के रूप में देखती है कि भगवान लोगों और राष्ट्रों की बड़ी दुनिया में कैसे काम करता है। वह अपने उद्धार पर खुशी मनाती है और फिर श्लोक 2 में ईश्वर पर गर्व करती है। फिर श्लोक 3 में वह कहती

है, “ इतना घमंड मत करो, या अपने मुँह से ऐसी अहंकार की बातें मत करो, क्योंकि यहोवा जानने वाला ईश्वर है, और उसी के द्वारा काम होते हैं तौला गया . “वह हर किसी को उनके कहे और किए गए हर काम के लिए उचित निर्णय के साथ जवाबदेह ठहराएगा।

फिर अध्याय 2 श्लोक 4-9 में सात विरोधाभासों की एक श्रृंखला है जो दर्शाती है कि ईश्वर मनुष्यों और राष्ट्रों की बड़ी दुनिया में कैसे काम करता है। श्लोक 4 में ध्यान दें: “ शूरवीरों के धनुष टूट गए हैं, परन्तु ठोकर खानेवाले बल से सुसज्जित हो गए हैं। ताकतवरों को नीचे गिरा दिया जाता है, लेकिन जो कमजोर होते हैं उन्हें ऊपर उठा लिया जाता है—आपको इस तरह का उलटफेर देखने को मिलता है। श्लोक 4 से श्लोक 9 तक यही चलता रहता है। मैं यह सब नहीं पढ़ूँगा, लेकिन श्लोक सात पर ध्यान दूँगा : “ यहोवा गरीबी और धन भेजता है; वह नम्र करता है और वह ऊँचा उठाता है। वह कंगालों को धूलि पर से, और दरिद्रों को राख के ढेर पर से उठाता है; वह उन्हें हाकिमों के साथ बैठाता है और उन्हें सम्मान के सिंहासन का उत्तराधिकारी बनाता है, ” इत्यादि। तो आपको कंट्रास्ट और रिवर्सल का यह विचार मिलता है। जैसा कि मैंने पहले ही उल्लेख किया है, आपको पहले अध्याय में पनिन्ना और हन्ना के साथ विरोधाभास मिलता है, और फिर आपको एली के पुत्रों और शमूएल के साथ विरोधाभास मिलता है, और बाद में शाऊल और डेविड के बीच विरोधाभास मिलता है। यानी, जैसा कि आप कह सकते हैं, हन्ना के इस गीत के साथ पहले से ही प्रत्याशित था।

गीत की अंतिम पंक्ति 2:10 में है, “ कोई ताकत से विजयी नहीं होता; जो यहोवा का विरोध करते हैं वे चकनाचूर हो जाएँगे। वह उन पर स्वर्ग से गरजेगा; यहोवा पृथ्वी की छोर तक का न्याय करेगा। वह अपने राजा को बल देगा, और अपने अभिषिक्त के सींग को ऊँचा करेगा। ” ध्यान दें कि 10बी एक राजा और एक अभिषिक्त व्यक्ति की बात करता है। हन्ना पहले से ही अनुमान लगाती है, मैं भविष्यवाणी से कहूँगा, इज़राइल में राजत्व का उदय। तो वह 2:1-10 में हन्ना का गीत है।

सी। एली के घराने पर आने वाला न्याय - 1 शमूएल 2:11-36 सी. 1 के अंतर्गत "1 शमूएल 2:11-36 में एली के घराने पर आने वाला न्याय है।" एल्काना रामा को अपने घर चला गया, और वह लड़का एली याजक के अधीन यहोवा की सेवा करने लगा। सैमुअल शीलो में रहता है। फिर पद 12 कहता

है कि एली के पुत्र दुष्ट लोग थे जिन्हें प्रभु का कोई सम्मान नहीं था। अगले कुछ श्लोकों में उनके भ्रष्ट आचरण का वर्णन किया गया है। तब आपको शमूएल और एली के पुत्रों के बीच यह विरोधाभास मिलता है। पद 17 पर ध्यान दें: "जवानों [एली के पुत्रों] का यह पाप यहोवा की दृष्टि में बहुत बड़ा था, क्योंकि वे यहोवा की भेंट का तिरस्कार कर रहे थे।" वहां अंग्रेजी में इसका अनुवाद "बहुत बढ़िया" किया जाता है; वहां का हिब्रू शब्द *गैडोल* है, "महान।" यदि आप 21बी तक जाते हैं तो आपको वही शब्द *गैडोल* मिलता है, इस बार सैमुअल के लिए: "इस बीच लड़का सैमुअल प्रभु की उपस्थिति में बड़ा हुआ।" वह "बड़ा हुआ" *गडोल* है- वह प्रभु की उपस्थिति में "महान बन गया"। सो तुम देख लो, एली के पुत्र तो पाप में बढ़े हैं, परन्तु शमूएल यहोवा के साम्हने महान होता गया है। 2:18-21 में आपके पास एल्काना, हन्ना और सैमुअल के धार्मिक घर का वर्णन है, जो काफी सकारात्मक है। "परन्तु शमूएल सनी का एपोद पहिने हुए एक बालक होकर यहोवा के साम्हने सेवा कर रहा था। हर साल उसकी माँ उसके लिए एक छोटा सा वस्त्र बनाती थी और जब वह अपने पति के साथ वार्षिक बलिदान चढ़ाने जाती थी तो उसे उसके पास ले जाती थी। एली ने एल्काना और उसकी पत्नी को यह कहते हुए आशीर्वाद दिया, "यहोवा तुम्हें इस स्त्री से सन्तान दे, कि तुम उस स्त्री का स्थान लो, जिसके लिये इस ने प्रार्थना करके यहोवा को दिया था।" फिर वे घर चले जायेंगे। और यहोवा हन्ना पर दयालु हुआ; वह गर्भवती हुई और उसने तीन बेटों और दो बेटियों को जन्म दिया। इस बीच, बालक शमूएल यहोवा की उपस्थिति में बड़ा हुआ। तो आप 2:18-21 में इस ईश्वरीय घर को देखें।

लेकिन इसकी तुलना एली के घराने से की गई है, और इसका वर्णन आपके पास 2:12-17 और 22-25 में है। श्लोक 12-17 में आपके पास एली के पुत्रों की बुरी प्रथाओं का वर्णन है, और श्लोक 22-25 में वह वर्णन जारी है। आप आयत 22 में पढ़ते हैं: "अब एली ने जो बहुत बूढ़ा था, सुना कि उसके बेटे सारे इस्राएल के साथ क्या कर रहे हैं, और वे मिलापवाले तम्बू के द्वार पर सेवा करने वाली स्त्रियों के साथ कैसे सोते हैं।" उसने उन्हें डाँटा, परन्तु उन्होंने अपने पिता की डाँट को अनसुना कर दिया। अब आपके पास इन दो परिवारों की तुलना है: एक तरफ एली और उसके बेटों की दुष्टता, और दूसरी तरफ

एल्कानह और हन्ना और सैमुअल का धार्मिक घर। इस विरोधाभास को लेखक द्वारा युवा लड़के

सैमुअल के बारे में की गई चार सकारात्मक टिप्पणियों द्वारा ध्यान में लाया गया है जो पूरे अध्याय में बिखरी हुई हैं। 2:11 में ध्यान दें, पहला: "लड़का याजक एली के अधीन यहोवा के सामने सेवा करता था।" 2:18, दूसरा: "परंतु शमूएल एक लड़का था जो सनी का कपड़ा पहने हुए प्रभु के सामने सेवा कर रहा था।" 2:21बी, तीसरा: "इस बीच लड़का शमूएल प्रभु की उपस्थिति में बड़ा हुआ।" और 2:26, चौथा: "और बालक शमूएल का कद और प्रभु और मनुष्यों की कृपा बढ़ती गई।" तो यह विरोधाभासों का एक अध्याय है: सैमुअल ने, एक धार्मिक घर से आकर, प्रभु की सेवा की; और इसकी तुलना एली के घर से की गई है।

जैसा कि मैंने बताया, एली के घराने पर फैसला आना है। 2:27 में और उसके बाद परमेश्वर का एक जन एली के पास आया और उस से कहा, यहोवा यों कहता है। वह उसे उसके घर के आचरण के लिए डांटता है और फिर उससे कहता है कि उसका घर इस्राएल के महायाजक के स्थान पर कब्जा नहीं करेगा। मैं उस पर चर्चा करने के लिए समय नहीं लूंगा। यह सी. है, "एली के घर पर फैसला आने वाला है।"

डी। शमूएल की पुकार - 1 शमूएल 3

डी। अध्याय 3 है, और वह है "शमूएल की पुकार।" जब शमूएल ने तम्बू में एली के साथ काम किया और वह एक युवा व्यक्ति बन गया, तो प्रभु ने उसे दर्शन दिए और उसे बुलाया। आपने अध्याय 3 में देखा है कि पहली कविता उस समय की एक तस्वीर देती है: " लड़का शमूएल एली के अधीन यहोवा के सामने सेवा करता था। उन दिनों में यहोवा का वचन दुर्लभ था; वहाँ बहुत सारे दर्शन नहीं थे ।" याद रखें, आप न्यायाधीशों के दौर में हैं। यह एक काला समय है, और प्रभु का वचन दुर्लभ था।

फिर एक रात यहोवा आता है और शमूएल से बात करता है। मुझे यकीन है कि आप इस कहानी से परिचित हैं। प्रभु उसे बुलाता है, और शमूएल सोचता है कि यह एली है जो बुला रहा है। वह कहता है, "मैं यहाँ हूँ, क्या आपने मुझे बुलाया?" और एली कहता है, "नहीं, मैंने तुम्हें नहीं बुलाया।" ऐसा कई बार चलता रहता है. अध्याय 3, श्लोक 6 पर ध्यान दें: " फिर यहोवा ने पुकारा, 'शमूएल!' और शमूएल उठकर एली के पास गया, और कहा, मैं यहाँ हूँ; आपने मुझे बुलाया। 'मेरे

बेटे,' एली ने कहा, 'मैंने नहीं बुलाया; "वापस जाओ और लेट जाओ।" श्लोक 8, " यहोवा ने तीसरी बार शमूएल को बुलाया, और शमूएल उठकर एली के पास गया और कहा, 'मैं यहाँ हूँ; आपने मुझे बुलाया।' तब एली को मालूम हुआ कि यहोवा लड़के को बुला रहा है। इसलिए एली ने शमूएल से कहा, 'जाओ, लेट जाओ। यदि वह तुम्हें बुलाए, तो कहना, "हे प्रभु, बोल, क्योंकि तेरा दास सुन रहा है।" तब शमूएल जाकर अपने स्थान पर लेट गया, और यहोवा आकर बातें करने लगा।

जो कुछ उसने शमूएल से कहा वह वैसा ही था जैसा परमेश्वर के उस जन ने पहले एली से कहा था, कि एली के घराने पर न्याय आने वाला है। श्लोक 11, " और यहोवा ने शमूएल से कहा, 'देख, मैं इस्राएल में कुछ करने पर हूँ, जिस से जो कोई भी इसके बारे में सुनेगा उसके कान झनझना उठेंगे। उस समय मैं एली के विरुद्ध आरम्भ से अन्त तक वह सब कुछ पूरा करूँगा जो मैंने उसके परिवार के विरुद्ध कहा था।" पद 14बी, "एली के घराने का अपराध कभी भी बलिदान या भेंट से प्रायश्चित नहीं किया जाएगा।" तो यह वह संदेश है जो प्रभु शमूएल को देता है। अगले दिन एली ने उससे पूछा कि प्रभु ने क्या कहा। आप कल्पना कर सकते हैं कि सैमुअल उसे बताने में अनिच्छुक है। परन्तु पद 17 में एली कहता है, "इसे मुझ से मत छिपाओ।" पद 18, "शमूएल ने उसे सब कुछ बता दिया, कुछ भी नहीं छिपाया। एली ने कहा, वह यहोवा है; उसे वही करने दो जो उसकी दृष्टि में अच्छा है।" तो यह वास्तव में भविष्यवक्ता बनने के लिए शमूएल की बुलाहट है।

है। प्रभु द्वारा शमूएल को बुलाने के क्रम के बीच में और शमूएल ने सोचा कि यह एली है, यह नहीं जानते हुए कि यह प्रभु बोल रहा है, श्लोक 7 कहता है, "अब शमूएल अभी तक प्रभु को नहीं जानता था।" आपको आश्चर्य है, इसका क्या मतलब है? उनका पालन-पोषण इसी धार्मिक घर में हुआ; वह याजक एली के अधीन तम्बू में यहोवा की सेवा करता था। यह क्यों कहेगा कि वह अभी तक प्रभु को नहीं जानता? मुझे लगता है कि 7ए की व्याख्या 7बी में मिलती है। श्लोक 7बी कहता है, "प्रभु का वचन अभी तक प्रकट नहीं हुआ था।" दिव्य रहस्योद्घाटन प्राप्त करने का यह अनुभव सैमुअल के लिए कुछ नया था। वह भगवान को उस अर्थ में नहीं जानता था; यह एक नया अनुभव था। अब, प्रभु इस्राएल को अपना वचन दे रहे हैं, आरंभ में एली के माध्यम से लेकिन बाद में शमूएल के माध्यम से पूरे इस्राएल को। इसलिए जब आप अध्याय के अंत में आते हैं, तो आप पद 19 में कुछ ऐसा पढ़ते हैं जो 3:1 से बहुत विपरीत होता है, जहां यह कहता है, "प्रभु का वचन दुर्लभ था; वहाँ

बहुत सारे दर्शन नहीं थे।" पद 19 में आपने पढ़ा, " जब शमूएल बड़ा हुआ, तब यहोवा उसके संग रहा, और उस ने उसकी कोई भी बात निष्फल न होने दी। " दूसरे शब्दों में, जब सैमुअल बोला, तो लोगों को समझ में आ गया कि उसने जो कहा उस पर भरोसा किया जा सकता है। उनकी बातें विश्वसनीय थीं।

तो श्लोक 20 कहता है, "दान से बेशेबा तक शमूएल को प्रभु के भविष्यवक्ता के रूप में पहचाना और प्रमाणित किया गया था।" यहाँ ईश्वर का प्रवक्ता है; यहाँ कोई है जो इस्राएल के लोगों को परमेश्वर का वचन सुनाता है। तो यह अध्याय 3 है।

2. सन्दूक की हानि और उसके बाद वापसी - 1 शमूएल 4:1-6:21 यह हमें सी के तहत आपकी रूपरेखा पर 2. पर लाता है, जो कि "नुकसान और उसके बाद वापसी" है सन्दूक: 1 शमूएल 4:1-6:21।" अध्याय 4-6 एक तरह से जहाज़ और पलिशितियों द्वारा उस पर कब्ज़ा करने के बारे में एक मूल स्व-निहित कहानी है। आपने उन पहले तीन अध्यायों में सैमुअल के जन्म, उसे शीलो ले जाए जाने और फिर भविष्यवक्ता बनने के लिए बुलाए जाने के बारे में पढ़ा। अध्याय 4-6 में आपके पास आर्क कथा है। जब आप अध्याय 7 पर पहुंचते हैं, सैमुअल दृश्य पर वापस आता है, लेकिन यहां आर्क और उसके कब्जे के बारे में एक अंतराल है जिसमें सैमुअल कोई भूमिका नहीं निभाता है।

तो अध्याय 4 में आपने पढ़ा कि इस्राएल पलिशितियों से लड़ने के लिए निकला, और वे युद्ध में हार गए। आपने पद 2बी में पढ़ा, " फिलिस्तियों ने इस्राएल से मुकाबला करने के लिए अपनी सेनाएँ तैनात कीं, और जैसे-जैसे युद्ध फैलता गया, इस्राएल पलिशितियों से हार गया, जिन्होंने उनमें से लगभग 4,000 को युद्ध के मैदान में मार डाला। " इसने इस्राएल के नेताओं को हैरान कर दिया; पद 3 में पुरनियों ने पूछा, "आज यहोवा ने पलिशितियों से हम को क्यों परास्त किया?" मुझे लगता है कि उन्हें यह एहसास होना चाहिए था कि शायद वे प्रभु पर भरोसा नहीं कर रहे थे या उनके रास्ते पर उस तरीके से नहीं चल रहे थे जिस तरह से उन्हें चलना चाहिए। मुझे ऐसा लगता है कि उन्हें इस बारे में सोचना चाहिए था, लेकिन वे ऐसा नहीं करते। वे जो करने का निर्णय लेते हैं वह श्लोक 3बी में है। वे कहते हैं, आओ हम यहोवा की वाचा का सन्दूक शीलो से ले आएं, कि वह हमारे संग चले, और हमें हमारे शत्रुओं के हाथ से बचाए। उन्होंने सोचा कि उन्हें अपने साथ युद्ध में सन्दूक ले जाना होगा

और इससे उनकी जीत सुनिश्चित होगी। तब आर्क वास्तव में इस अध्याय का विषय बन जाता है।

अध्याय 4 में बारह बार विभिन्न पदनामों के साथ आर्क का उल्लेख किया गया है। श्लोक 4 में इसे सर्वशक्तिमान भगवान के सिंहासन के आसन के रूप में वर्णित किया गया है: “लोगों ने सिंहासन के आसन को शीलो में भेज दिया। वे सर्वशक्तिमान यहोवा की वाचा का सन्दूक ले आए, जो उस समय करूबों के बीच में विराजमान था।” याद रखें कि हमने पहले इसके बारे में बात की थी, कि यहोवा इस्राएल का राजा था और वह सन्दूक पर विराजमान था; यह उसका सिंहासन था।

अध्याय 4 श्लोक 4बी में कहा गया है कि एली के दो बेटे होप्पी और फिनीस परमेश्वर की वाचा के सन्दूक के साथ वहां थे। अब यह इस अध्याय में एक प्रकार का अशुभ संकेत है। यहोवा ने पहले ही एली के घराने और होप्पी और फिनीस पर न्याय सुना दिया है, और कहा है कि वे दोनों एक ही दिन मरेंगे। अब होप्पी और फिनीस ही हैं जो सन्दूक को युद्ध में ले जाने वाले हैं। और वे ऐसा करते हैं, और आप पद 5 में पढ़ते हैं, " जब यहोवा की वाचा का सन्दूक छावनी में आया, तब सारे इस्राएल ने ऐसा बड़ा जयजयकार किया कि भूमि हिल गई।" जब फिलिश्तियों ने सुना, तो पहिले तो वे डर गए। जैसा कि श्लोक 7 में कहा गया है, " फिलिश्ती डरे हुए थे। उन्होंने कहा, 'शिविर में एक देवता आया है।' 'परेशानी में थे! ऐसा पहले कभी नहीं हुआ. हम पर धिक्कार है! इन शक्तिशाली देवताओं के हाथ से हमें कौन बचाएगा? वे वे देवता हैं जिन्होंने रेगिस्तान में मिस्रियों पर सभी प्रकार की विपत्तियाँ डालीं।" लेकिन इसके बावजूद उन्होंने साहस दिखाया। आपने श्लोक 10 में पढ़ा कि वे लड़े और इस्राएली फिर से हार गए। लेकिन पराजित होने से भी बदतर, आप श्लोक 11 में पढ़ते हैं, "भगवान के सन्दूक पर कब्जा कर लिया गया, और एली के दो बेटे होप्पी और फिनीस मर गए।"

अब ऐसा लगता है कि इसराइल यहां गलत कर रहा था, जब वे शुरू में हार गए थे, तो अपने भीतर झाँकने और इस बारे में सवाल पूछने के बजाय कि वे प्रभु के प्रति वफादार थे या नहीं, उन्होंने सन्दूक को एक जादू की तरह लेने का फैसला किया। तावीज़ जो किसी तरह जादुई रूप से उनके लिए जीत या सौभाग्य लाने वाला था। मुझे लगता है कि विचार यह था कि यदि आप दैवीय उपस्थिति के प्रतीक को युद्ध में ले जाकर हेरफेर करते हैं, तो आप भगवान को जीत दिलाने के लिए मजबूर कर सकते हैं। यह एक बुतपरस्त विचार है, बाइबिल आधारित विचार नहीं। मुझे लगता है कि वे भूल गए थे कि वाचा के संदर्भ में सन्दूक दैवीय उपस्थिति का प्रतीक था। जब अनुबंध का

उल्लंघन किया जाता है, तो सन्दूक का कोई महत्व नहीं है। आप केवल इस बक्से को युद्ध में ले जाकर ईश्वर की उपस्थिति के लिए बाध्य नहीं कर सकते।

लेकिन वे ऐसा करते हैं, और सन्दूक पर कब्जा कर लिया जाता है। यह अभिव्यक्ति "परमेश्वर के सन्दूक पर कब्जा कर लिया गया" श्लोक 11 और उसके बाद में पाँच बार आता है। यह कुछ ऐसा हो जाता है जो लगभग अकल्पनीय है। आप श्लोक 11 में देखते हैं, "भगवान के सन्दूक पर कब्जा कर लिया गया है," श्लोक 17 में "भगवान के सन्दूक पर कब्जा कर लिया गया है," श्लोक 19 में "भगवान के सन्दूक पर कब्जा कर लिया गया है।" श्लोक 21 में, फिनीस की पत्नी, जिसने उसे जन्म दिया था, के बारे में कहा गया है, "उसने यह कहकर लड़के का नाम ईकाबोड रखा, 'परमेश्वर के सन्दूक के छीन लेने के कारण इस्राएल से प्रभु का तेज चला गया है।'" फिर श्लोक 22 में वह कहती है, "परमेश्वर के सन्दूक पर कब्जा कर लिया गया है।" इसलिए इस्राएल ने सोचा कि वे सन्दूक ले जाकर पलिशियों पर विजय दिलाने के लिए प्रभु को बाध्य कर सकते हैं, लेकिन उन्होंने पाया कि वे गंभीर रूप से गलत थे।

जहाज़ पर कब्जा करने पर फ़िलिस्तिनों की प्रतिक्रिया - डैगन का मंदिर लेकिन आइए अध्याय पाँच और छह पर जल्दी से जाएँ। फ़िलिस्ती इसे एक बड़ी जीत मानते हैं—उन्होंने न केवल इस्राएलियों को हराया है, बल्कि सन्दूक पर कब्जा कर लिया है। वे क्या करते हैं? पद 2, वे इसे दागोन के मन्दिर में ले गए और पलिशियों के देवता दागोन के पास रख दिया। तब यह विचार प्राचीन दुनिया में बहुत प्रमुख था कि यदि आप कोई युद्ध जीतते हैं, तो आपका देवता उन लोगों के देवता से अधिक मजबूत होता है जिन्हें आपने हराया था। निस्संदेह उन्होंने निष्कर्ष निकाला कि पलिशियों का देवता दागोन यहोवा से अधिक शक्तिशाली था, जिसके सन्दूक पर उन्होंने कब्जा कर लिया था।

उन्होंने इसे दागोन के मन्दिर में रखा। परन्तु पद 3 में आप पढ़ते हैं कि जब वे अगले दिन उठे, तो दागोन यहोवा के सन्दूक के पास भूमि पर मुंह के बल गिरा पड़ा था। यह लगभग वैसा ही है जैसे वह यहोवा के सामने झुक रहा हो। तो आखिर वे करते क्या हैं? वे अपने देवता को उठाते हैं - यह लगभग हास्यप्रद है। उन्होंने उसे सहारा दिया और उसे फिर से खड़ा कर दिया। अगली सुबह

भी वैसा ही हुआ. वह ज़मीन पर मुँह के बल गिरा है, लेकिन इस बार उसका सिर और हाथ टूट गये हैं। तो यहाँ एक देवता है जिसका सिर और हाथ नहीं है। एक बहुत ही शक्तिहीन देवता - उसके पास सोचने के लिए कोई सिर नहीं है, कुछ भी करने के लिए उसके हाथ नहीं हैं। फिर शेष अध्याय में जो चलता है वह शब्दों पर एक दिलचस्प नाटक है जहाँ "भगवान के हाथ" की तुलना "डैगन के हाथ" से की जाती है क्योंकि डैगन का वह हाथ टूट गया है। परन्तु श्लोक 6 को देखें: “यहोवा का हाथ अशदोद और उसके आस-पास के लोगों पर भारी था; उसने उन पर विनाश ला दिया और उन्हें ट्यूमर से पीड़ित कर दिया।” जब यह कहता है, "प्रभु का हाथ भारी था," तो यह शब्दों पर दोहरा खेल है; बात केवल यह नहीं है कि डैगन के हाथ टूट गए थे, बल्कि प्रभु का हाथ भारी था। "भारी" जड़ का *मतलब* है, भारी होना। यह वही मूल है, *चबोड*, जो प्रभु की "महिमा" के लिए शब्द है जो सन्दूक पर कब्ज़ा होने पर इज़राइल से चला गया था। इसलिए यहाँ शब्दों का बहुविध खेल है। प्रभु का हाथ भारी था, पद 6; आयत 7 हमें बताती है कि अशदोद के लोगों ने कहा, "इस्राएल के परमेश्वर का सन्दूक हमारे बीच यहाँ नहीं रहेगा, क्योंकि उसका हाथ हम पर और दागोन पर भारी है।" इसलिए वे इसे गत में ले जाते हैं—यह श्लोक 8 में है—लेकिन क्या होता है? श्लोक 9, "जब उन्होंने उसे हटाया तो यहोवा का हाथ उस नगर के विरुद्ध हुआ।" सो यहोवा का हाथ बलवन्त है, और वे उसे फिर हिलाते हैं; पद 10 में वे इसे एक्रोन में ले जाते हैं। एक्रोन के लोग इस सन्दूक से कोई लेना-देना नहीं चाहते। वे विलाप करते हैं, "वे हमें और हमारे लोगों को मारने के लिए इस्राएल के परमेश्वर के सन्दूक को हमारे चारों ओर ले आए हैं।" तब उन्होंने पलिशियोंके सब हाकिमोंको इकट्ठे करके कहा, सन्दूक को विदा करो, वह अपने स्थान को लौट जाए, नहीं तो वह हमें और हमारी प्रजा को मार डालेगा। फिर तुमने फिर पढ़ा, “परमेश्वर का हाथ नगर पर बहुत भारी था।”

जहाज़ की वापसी लेकिन सात महीनों तक कुछ नहीं किया गया, जैसा कि आप 6:1 में पढ़ते हैं। फिर अंततः विचार यह है, "बेहतर होगा कि हम इस जहाज़ को उसके देश में वापस भेज दें।" यह कैसे करना है इस पर सलाह के लिए पुजारी और भविष्यवक्ताओं को बुलाया गया। उन्होंने क्या सलाह दी? उन पुजारियों को अब भी यकीन नहीं हो रहा है कि यह यहोवा की शक्ति है जो ये सब काम कर रही है। उनका प्रस्ताव है कि यह महज़ संयोग हो सकता है कि ये सभी ट्यूमर उन सभी

स्थानों पर फूट रहे हैं जहां वह आर्क है। वे कहते हैं, "हम इसका पता लगाने के लिए एक परीक्षण करेंगे।" आप इसका वर्णन अध्याय 6, श्लोक 7 में पाते हैं: " अब, एक नई गाड़ी तैयार करो, जिसमें दो गायें हों जो ब्या चुकी हों और जिन्हें कभी जुता न गया हो। गायों को गाड़ी में बांधो, परन्तु उनके बछड़ों को ले जाओ और उन्हें कलमबद्ध करो। यहोवा का सन्दूक ले कर गाड़ी पर रखो, और उसके पास एक सन्दूक में वे सोने की वस्तुएं रखो जिन्हें तुम दोषबलि करके उसके पास लौटा रहे हो। इसे रास्ते पर भेजो, लेकिन इसे देखते रहो। यदि वह अपने निज भाग अर्थात् बेतशेमेश की ओर बढ़े, तो यहोवा ने हम पर यह बड़ी विपत्ति डाल दी है। लेकिन अगर ऐसा नहीं होता है, तो हमें पता चल जाएगा कि यह उसका हाथ नहीं था [वहाँ, "उसका हाथ" फिर से] जिसने हमें मारा और यह हमारे साथ संयोग से हुआ। इसलिए पलिशितियों का धार्मिक नेतृत्व अभी भी आश्वस्त नहीं था कि यहोवा की शक्ति काम कर रही थी। वे यह सोचकर यह प्रस्ताव रखते हैं कि यह कुछ ऐसा है जो कभी घटित नहीं होगा। लेकिन क्या होता है? उन्होंने ऐसा किया - उन्होंने सन्दूक को गाड़ी पर रख दिया, और आप श्लोक 12 में पढ़ते हैं, " तब गायें सड़क पर चलते हुए और पूरे रास्ते झुकते हुए सीधे बेतशेमेश की ओर चली गईं; वे न दाहिनी ओर मुड़े, न बायीं ओर।" ये ऐसी गायें हैं जिन्हें कभी नहीं बांधा गया है और उन्होंने केवल बछड़ों को जन्म दिया है और वे सीधे इज़राइल में बेथशेमेश की ओर बढ़ती हैं।

इसलिए मुझे लगता है कि यहां अध्याय 4 में जो चल रहा है वह यह है कि यहोवा ने यह स्पष्ट कर दिया है कि उसे इज़राइल द्वारा धोखा नहीं दिया जाएगा। आप युद्ध में केवल एक सन्दूक नहीं ले जा सकते हैं और इस प्रकार परमेश्वर को आपकी ओर से हस्तक्षेप करने के लिए मजबूर नहीं कर सकते हैं। लेकिन अध्याय 5 में, प्रभु ने पलिशितियों को यह निष्कर्ष निकालने की अनुमति नहीं दी कि उनकी जीत ने खुद पर डैगन की श्रेष्ठता को प्रदर्शित किया। पलिशितियों को यह मानने के लिए मजबूर किया गया कि इस्राएल का परमेश्वर दागोन से अधिक शक्तिशाली है। तो यहोवा के भारी हाथ, अर्थात् वह *जड़ जड़*, ने इन घटनाओं में स्वयं के लिए महिमा दी - *चाबोद* / इसलिए अध्याय 6 में सन्दूक को वापस कर दिया गया और किरियथ ले जाया गया जेरीम , और उसके बाद अबिनादाब के घर, जहां वह बीस साल तक रहा।

3. एबेनेज़र की विजय - 1 शमूएल 7:1-14 ठीक है, चलिए अध्याय 7 पर चलते हैं। मैं इस अध्याय पर कुछ संक्षिप्त टिप्पणियाँ करना चाहता हूँ। यह बीस साल बाद है, आपने अध्याय 7 के श्लोक 2 में पढ़ा। यह 3. आपकी रूपरेखा पर है, जो "एबेनेज़र की जीत, अध्याय 7:1-14" है। बीस साल बाद फ़िलिस्तीन अभी भी इसराइल को धमकी दे रहे हैं। शमूएल अब नेतृत्व लेता है, और पद 3 में ध्यान दें कि वह इस्राएल से क्या कहता है: " यदि तू अपने सम्पूर्ण मन से यहोवा की ओर फिरा है, तो पराए देवताओं और अशतोरेत से छुटकारा पाकर यहोवा के प्रति समर्पित हो जा और केवल उसी की सेवा कर; और वह तुम्हें पलिशियों के हाथ से छुड़ाएगा।" इस्राएली ऐसा ही करते हैं; आप श्लोक 6 में देख सकते हैं कि उन्होंने उपवास किया और स्वीकार किया, "हमने प्रभु के विरुद्ध पाप किया है।" जब वे ऐसा कर रहे थे, पलिशती उन पर आक्रमण करते हैं और वे भयभीत हो जाते हैं। 7:8 में वे शमूएल से कहते हैं, "हमारे लिये हमारे परमेश्वर यहोवा की दोहाई देना न छोड़, कि वह हमें पलिशियों के हाथ से बचाए।" शमूएल भेंट चढ़ाता है, वह यहोवा से प्रार्थना करता है, और यहोवा उत्तर देता है। आप पद 10 में पढ़ते हैं, "यहोवा ने पलिशियों पर बड़ी गरज के साथ गरज कर उन्हें ऐसा आतंकित कर दिया कि वे इस्राएलियों के सामने से हार गए।" इज़राइल की एक बड़ी जीत है, जो आप अध्याय 4 में देखते हैं उसके बिल्कुल विपरीत जब उन्होंने पश्चाताप नहीं किया और कबूल नहीं किया और प्रभु की मदद मांगी और इसलिए सन्दूक खो दिया। इसलिए मुझे लगता है कि अध्याय 7 दर्शाता है कि इज़राइल कैसे सुरक्षा की भावना पा सकता है और कर सकता है अपने शत्रुओं पर सुरक्षित विजय प्राप्त करें। उसे अनुबंध के मार्ग पर चलते हुए ऐसा करना चाहिए और प्रभु से उसकी ओर से हस्तक्षेप करने और उसे अपने दुश्मनों से बचाने की मांग करनी चाहिए जैसा कि उसने करने का वादा किया था।

4. सैमुअल इज़राइल में एक नेता के रूप में स्थापित है

हम अध्याय 7, श्लोक 15-17 के अंत में आ गए हैं। यानी 4. आपकी रूपरेखा में, "सैमुअल इज़राइल में एक नेता के रूप में स्थापित है।" आपको श्लोक 15-17 में उनके जीवन का सारांश मिलता है जहाँ आप पढ़ते हैं, " शमूएल अपने जीवन के सभी दिनों में इस्राएल पर न्यायाधीश के रूप में कार्य करता रहा। वह प्रति वर्ष बेटेल से लेकर गिलगाल और मिस्पा तक घूमकर उन सब

स्थानों में इस्राएल का न्याय करता रहा। परन्तु वह सदैव रामा को, जहां उसका घर था, लौट जाता था, और वहीं इस्राएल का न्याय भी करता था। और उस ने वहां यहोवा के लिये एक वेदी बनाई।

5. राजत्व और वाचा की निरंतरता की स्थापना - 1 शमूएल 8-12 तो यह हमें आपकी रूपरेखा पर 5वें नंबर पर लाता है, जो है "राजत्व और वाचा की निरंतरता की स्थापना, 1 शमूएल 8-12।" मैंने आपको आपकी रूपरेखा में उस बिंदु पर एक हैंडआउट दिया था। मुझे लगता है कि 1 सैमुअल में अध्याय 8-12 पुस्तक के पाँच अधिक महत्वपूर्ण अध्याय हैं। निःसंदेह 2 शमूएल 7 दाऊद के शाश्वत वंश की प्रतिज्ञा के साथ-साथ एक बहुत ही महत्वपूर्ण अध्याय भी है। लेकिन सैमुअल का यह खंड इज़राइल में राजत्व के उदय से संबंधित है, और इज़राइल में राजत्व की शुरूआत उनके लिए एक बहुत ही महत्वपूर्ण बदलाव है। यह प्रत्यक्ष धर्मतंत्र से, जिसमें यहोवा दैवीय राजा था, एक अधिक अप्रत्यक्ष धर्मतंत्र में, जिसमें राजा यहोवा के लिए एक उप-शासनकर्ता होता है, धर्मतंत्र का पुनर्गठन है। इससे कई सवाल खड़े होते हैं। इसलिए मैं इस पर आपके साथ काफी समय बिताना चाहता हूँ और इसीलिए मैंने आपको हैंडआउट दिया है। मुझे लगता है कि इससे हमें इस पर काम करने में मदद मिलेगी।

यदि आप अपने हैंडआउट को देखें, तो 5. "1 शमूएल 8-12 में राजसत्ता और वाचा की निरंतरता की स्थापना" है। यह इस्राएल में राजत्व के उदय का वर्णन करता है। 1 सैमुअल का यह खंड वास्तव में पाँच उप-खंडों में विभाजित है और वे वही हैं जो स्क्रीन पर हैं।

1 शमूएल 8 में आपसे अनुरोध है। 1 शमूएल 9:1-10:16 में आपके पास शमूएल द्वारा निजी तौर पर शाऊल का राजा बनने के लिए अभिषेक करने की कहानी है। वह ऐसा तब करता है जब शाऊल अपने पिता के खोए हुए मवेशियों की तलाश में होता है। शाऊल अपने नौकर की सलाह पर शमूएल के पास जाता है, और पूछता है कि वह लापता मवेशियों को कहाँ पा सकता है। प्रभु ने शमूएल को पहले ही बता दिया था, "कोई तुम्हारे पास आकर तुमसे यह जानकारी माँगने वाला है। वह वही है जिसे मैंने इस्राएल पर नेता बनने के लिए चुना है; तुम्हें उसका अभिषेक करना है।" तो यह 1 शमूएल 9:1-10:16 में है। यहां अध्याय विभाजन उचित स्थानों पर नहीं हैं क्योंकि वह एक कथात्मक इकाई है—9:1-10:16।

उस निजी अभिषेक के बाद, 1 शमूएल 10:17-27 में जारी रखने के लिए शाऊल का एक सार्वजनिक चयन होता है, जहाँ शमूएल पूरे इज़राइल को मिज़पा में एक सभा में बुलाता है। यहाँ शाऊल को राजा बनने के लिए चिट्ठी डालकर चुना गया है। तो 10:17-27 में, शाऊल को मिस्या में सार्वजनिक रूप से चिट्ठी डालकर चुना गया। वह एक अलग कथा है।

1 शमूएल 11:1-13 अम्मोनियों द्वारा इस्राएल के उत्तरी भागों पर खतरे की कहानी है। शाऊल एक सेना खड़ी करता है और अम्मोनियों से लड़ने जाता है और विजयी होता है। इसलिए राजा बनने के लिए शाऊल की पसंद की पुष्टि अम्मोनियों पर जीत से होती है, और यह 1 शमूएल 11 के श्लोक 13 से पता चलता है।

अध्याय 11 से अध्याय 12 तक श्लोक 14 में वर्णन किया गया है कि मैं गिलगाल में आयोजित एक अनुबंध नवीनीकरण समारोह को क्या कहूंगा, जहां यहोवा के प्रति निष्ठा के नवीनीकरण के संदर्भ में शाऊल को राजा के रूप में उद्घाटन किया गया है। शाऊल का उद्घाटन गिलगाल में सैमुअल द्वारा बुलाए गए अनुबंध नवीनीकरण समारोह में किया गया। अपने हैंडआउट पर वापस जाएं : “अक्सर यह दावा किया जाता है कि सैमुअल का यह खंड ऐसे स्रोतों से बना है जो राजशाही के प्रति अलग-अलग दृष्टिकोण को दर्शाते हैं। धारा 1, 3, और 5 को देर से, ऐतिहासिक रूप से अविश्वसनीय, राजशाही विरोधी स्रोत कहा जाता है जो राजत्व के लंबे और बुरे अनुभव के बाद लिखे गए थे। दूसरे शब्दों में, 1., अध्याय 8 में एक राजा के लिए अनुरोध; 3., मिज़पाह में लॉटरी द्वारा चयन; और 5., गिलगाल में समारोह। कहा जाता है कि खंड 2 और 4 पहले लिखे गए थे और कहा जाता है कि ये ऐतिहासिक रूप से अधिक विश्वसनीय राजतंत्र-समर्थक स्रोत हैं। राजसत्ता के प्रति उनका दृष्टिकोण अधिक आशावादी और अनुकूल है। यह मुख्यधारा के बाइबिल अध्ययनों में 1 सैमुअल के इस खंड का एक बहुत ही मानक साहित्यिक विश्लेषण है।

लेकिन मुझे नहीं लगता कि इस तरह का विश्लेषण करीबी जांच के लायक है। यह सच है कि धारा 1, 3, और 5 में इसराइल के पाप और एक राजा के लिए अनुरोध के बारे में मजबूत बयान हैं, और इस वजह से आप कह सकते हैं कि यह राजत्व के प्रति नकारात्मक रुख को दर्शाता है। यदि राजा के लिए पूछना पाप था, तो यह राजत्व के प्रति एक प्रकार का नकारात्मक रवैया होगा। लेकिन समस्या यह है कि खंड 1, 3, और 5 में यह लगातार नकारात्मक नहीं है। साथ ही, वही

अनुच्छेद यह स्पष्ट करते हैं कि इस्राएल को एक राजा देना प्रभु का उद्देश्य है। तो आप कह सकते हैं कि इसका वह अंश राजसत्ता के संबंध में सकारात्मक है।

एक। आख्यान 1, 3, और 5 में राजत्व को पापपूर्ण के रूप में दर्शाया गया है। अब आइए उन कुछ कथनों पर नजर डालें जिनमें आख्यान 1, 3, और 5 में राजत्व को पापपूर्ण के रूप में दर्शाया गया है। कथा 1 में अध्याय 8:7बी में आपने पढ़ा, " सुनो वह सब जो लोग तुम से कह रहे हैं; उन्होंने तुम्हें नहीं, बल्कि मुझे अपने राजा के रूप में अस्वीकार किया है। " यह यहोवा तब बोलता है जब इस्राएल एक राजा की मांग करता है। कथा 3 में 10:19 में आप पढ़ते हैं, " परन्तु अब तू ने अपने परमेश्वर को, जो तुझे तेरी सब विपत्तियों और संकटों से बचाता है, तुच्छ जाना है। और आपने कहा है, 'नहीं, हमारे ऊपर एक राजा स्थापित करो।' तो फिर यह नकारात्मक है: आपने भगवान को अस्वीकार कर दिया है और अपने ऊपर एक राजा स्थापित करने के लिए कहा है। 12:17 में कथा 5 में, " क्या यह गेहूं की फसल नहीं है? मैं यहोवा से गरज और वर्षा भेजने के लिये प्रार्थना करूंगा। और तू जान लेगा कि तू ने राजा मांगकर यहोवा की दृष्टि में कैसा बुरा काम किया है। श्लोक 19 में, "सभी लोगों ने शमूएल से कहा, 'अपने सेवकों के लिए अपने परमेश्वर यहोवा से प्रार्थना करो ताकि हम मर न जाएं, क्योंकि हमने राजा के लिए पूछने की बुराई को अपने सभी अन्य पापों में जोड़ दिया है।'" श्लोक में 20 शमूएल कहता है, तू ने यह सब बुराई की है; तौभी यहोवा से विमुख न होना, वरन अपने सम्पूर्ण मन से यहोवा की सेवा करना।" तो आपके पास वे कथन हैं जो कहते हैं कि इस्राएल के लिए राजा की मांग करना पाप था; यह राजसत्ता के प्रति एक नकारात्मक रवैया है।

बी। राजत्व का सकारात्मक दृष्टिकोण दूसरी ओर, उन्हीं परिच्छेदों में, अध्याय 8:7, 9, और 22 को देखें। 8:7 में, प्रभु ने शमूएल से कहा, "जो कुछ लोग तुमसे कह रहे हैं उसे सुनो।" और श्लोक 9 में, "उनकी बात सुनो।" श्लोक 22 में, "उनकी बात सुनो और उन्हें एक राजा दो।" यह प्रभु के उद्देश्यों के अंतर्गत था कि इस्राएल को एक राजा मिलना चाहिए। तीसरे स्रोत के लिए 1 शमूएल 10:24-25 देखें: "शमूएल ने लोगों से कहा, 'क्या तुम उस मनुष्य को देखते हो जिसे यहोवा ने चुना है?'" चिट्ठी शाऊल के नाम पर निकली, क्योंकि यहोवा ने शाऊल को चुना था। "उसके जैसा कोई नहीं है।"

और फिर पद 25 में, "शमूएल ने लोगों को राजत्व के नियम समझाए।" सैमुअल ने इस्राएल के राजा की भूमिका के कार्य को समझाया। यह बहुत बुरा है कि हमारे पास उस दस्तावेज़ की एक प्रति नहीं है, लेकिन यह संभवतः व्यवस्थाविवरण 17 में राजा के कानून जैसा दिखता है। स्रोत 5 में, 12:13 देखें: "अब यहाँ वह राजा है जिसे आपने चुना है, जिसे आपने चुना है के लिए कहा; देख, यहोवा ने तेरे ऊपर एक राजा नियुक्त किया है।" यह सकारात्मक है: "प्रभु ने तुम्हारे ऊपर एक राजा नियुक्त किया है।" इसलिए 1 सैमुअल 8-12 में तनाव उन स्रोतों के बीच संघर्ष का नहीं है जो या तो राजा समर्थक या विरोधी हैं।

सी। गिलगाल किंगशिप में किंगशिप और अनुबंध नवीनीकरण ही कोई मुद्दा नहीं है। तनाव इस बात पर केंद्रित है कि क्या राजशाही याहवे के साथ इज़राइल के वाचा संबंध की पुष्टि करती है या नहीं। जब इज़राइल ने आस-पास के राष्ट्रों की तरह एक मानवीय राजा की इच्छा रखते हुए राष्ट्रीय सुरक्षा की मांग की - 1 शमूएल 8:5 और 20 - तो उसने वास्तव में यहोवा को अस्वीकार कर दिया जो उसका राजा था - 1 शमूएल 8:7, 10:19-20 और 12:12 . वाचा का उल्लंघन वह पाप था जिसके लिए इज़राइल की निंदा की गई थी। यही मुद्दा है. जब शमूएल ने प्रभु के आदेश पर इस्राएल को एक राजा दिया, तो उसने गिलगाल में आयोजित वाचा नवीनीकरण समारोह के संदर्भ में ऐसा किया जहां राजत्व स्थापित किया गया था। यह यहोवा के प्रति निष्ठा की पुष्टि की सेटिंग में दिया गया था, और यही आप 1 शमूएल 11:14, 12-25 में पाते हैं। वास्तव में, यह मार्ग पिछले अध्यायों में कथित राजतंत्र विरोधी तनाव के समाधान की कुंजी है, क्योंकि यहां उस तनाव का समाधान एक ऐसे राजत्व की स्थापना करके किया जाता है जो अनुबंध से इनकार करने के बजाय उसके अनुरूप है।

डी। इज़राइल के राजा के रूप में ईश्वर अब, इन आख्यानों को इस तरह से समझने से इस सवाल पर प्रकाश पड़ता है कि इज़राइल के कनान में आने के कई शताब्दियों बाद तक इज़राइल में राजत्व क्यों नहीं पैदा हुआ। आसपास के सभी राष्ट्रों में राजा थे। इस्राएल का कोई राजा क्यों नहीं था? कुछ लोग सुझाव देंगे कि यह इज़राइल के जंगल से बाहर आने के बाद खानाबदोश से गतिहीन जीवन शैली में परिवर्तन की आवश्यकता का परिणाम है। अन्य लोग कहेंगे कि चूँकि जनजातियाँ

अपनी क्षेत्रीय संपत्ति की ओर चली गई, इसलिए लोगों में कोई केंद्रीय एकता नहीं थी। लेकिन मुझे नहीं लगता कि इस प्रकार की परिस्थितिजन्य व्याख्याएं वास्तविक मुद्दे तक पहुंचती हैं।

यह एक प्रमुख मुद्दा है। इस्राएल को परमेश्वर ने अपनी प्रजा बनने के लिए चुना था; वह उनका राजा था। वह उनके बीच में रहता था, और सन्दूक उसका सिंहासन था। यह प्रभु ही थे जिन्होंने इस्राएल को युद्ध में नेतृत्व किया और उन्हें विजय दिलाई, जैसा कि आप विजय के समय बार-बार देखते हैं। आप 1 शमूएल 7 में पलिशियों पर उस विजय का एक ताज़ा उदाहरण देख सकते हैं। यह यहोवा ही था जो राजा के रूप में देश में रहता था। लेकिन इज़राइल उस व्यवस्था से असंतुष्ट हो गया। उन्होंने प्रत्यक्ष धर्मतंत्र को एक विशेषाधिकार और ताकत के बजाय एक दायित्व और कमजोरी के रूप में देखा। जब उन्होंने शमूएल से उन्हें एक राजा देने के लिए कहा, तो उनका अनुरोध प्रभु, जो उनका राजा था, की अस्वीकृति थी। इसे 1 शमूएल 8:7, 10:19, और 12:12 में उन संदर्भों में दोहराया गया है। इसलिए इस्राएल यहोवा के स्थान पर एक मानवीय राजा चाहता था। वे एक राष्ट्रीय नायक, राष्ट्रीय शक्ति और एकता का प्रतीक चाहते थे, कोई ऐसा व्यक्ति जो उन्हें सुरक्षा और आराम की स्पष्ट गारंटी प्रदान करे। इसलिए एक राजा के लिए उनका अनुरोध उनके राजा के रूप में यहोवा की भूमिका की पर्याप्तता के संबंध में संदेह को दर्शाता है। यह उनके शत्रुओं के डर को दर्शाता है जो उन्हें धमकी दे रहे थे - इस संदर्भ में यह अभी भी पलिशियों के साथ-साथ अम्मोनियों का भी है। फिर तीसरे आसपास के राष्ट्रों के साथ राष्ट्रीय एकता और सुरक्षा खोजने का प्रयास किया गया। तो यह अनुरोध की पृष्ठभूमि और प्रेरणा है। वे प्रेरणाएँ गलत थीं, और इस्राएल जिस प्रकार का राजा चाहता था वह गलत था।

हालाँकि, भगवान के उद्देश्यों में, पिछले रहस्योद्घाटन में पहले से ही प्रत्याशित राजत्व का समय अब आ गया था। मैंने पहले उल्लेख किया था कि यदि आप इब्राहीम के पास वापस जाते हैं, तो उत्पत्ति 49:10 कहता है, "राजा इब्राहीम से निकलेंगे," "राजदंड यहूदा से नहीं हटेगा।" व्यवस्थाविवरण 17 राजत्व के कानून का वर्णन करता है। तो ये सभी प्रत्याशाएँ हैं कि राजत्व उत्पन्न होगा। प्रभु के उद्देश्यों में, राजसत्ता के उदय का समय यहीं और अभी था। यद्यपि इस्राएल ने गलत कारणों से एक राजा की इच्छा की थी, उन्हें उनकी त्रुटि के बारे में चेतावनी देने के बाद, परमेश्वर ने शमूएल से उन्हें एक राजा देने के लिए कहा।

कोई जोसेफ के शब्दों को स्थिति पर रख सकता है। यूसुफ को उसके भाइयों द्वारा बेचे जाने के बाद, उसने उनसे कहा, "आपने मेरे खिलाफ बुराई करने का इरादा किया था, लेकिन भगवान ने इसे अच्छा करने की योजना बनाई थी जो अब किया जा रहा है, जिससे कई लोगों की जान बच गई।" मुझे लगता है कि आप कह सकते हैं कि इसका राजत्व की प्रेरणा से कुछ लेना-देना है। प्रेरणा सही थी या नहीं, भगवान ने उन्हें एक राजा देकर उनकी बुरी प्रेरणा को अच्छी चीज़ में बदल दिया।

इ। कानून/संविदा के तहत राजत्व इसलिए राजत्व स्थापित किया गया था, लेकिन यह लोगों द्वारा अनुरोध किए गए राजत्व से भिन्न प्रकार का राजत्व था। 1 शमूएल 10:25 में, व्यवस्थाविवरण 17:14-20 को याद करते हुए, ध्यान दें कि राजा को प्रभु के कानून के अधीन रखा गया है। इस्राएल का राजा अपने शासन में स्वायत्त नहीं था। यदि आप आस-पास के राष्ट्रों को देखें, तो राजा का शब्द ही कानून था और राजा को या तो दैवीय या दैवीय अधिकार वाले प्रवक्ता के रूप में देखा जाता था। इजराइल में राजसत्ता का एक अलग विचार है। इस्राएल में राजा को अपने भाइयों से ऊँचा नहीं होना चाहिए था; उसकी पूजा नहीं की जानी थी; उसे घोड़ों या पत्नियों की संख्या नहीं बढ़ानी थी (व्यवस्थाविवरण 17)। उसे परमेश्वर के नियम के अनुसार शासन करना चाहिए। दूसरे शब्दों में, राजा स्वयं कोई कानून नहीं है। वह हर तरह से इसराइल में रहने वाले किसी भी अन्य व्यक्ति की तरह मूसा के कानून के अधीन है। इसलिए ईश्वर की आज्ञा से इस्राएल को राजसत्ता प्राप्त हुई, भले ही इसकी स्थापना लोगों की राजा के प्रति गलत इच्छा के कारण हुई थी। लेकिन शमूएल द्वारा जिस प्रकार के राजत्व का उद्घाटन किया गया था, उसे वाचा के भीतर एक राजत्व के रूप में डिजाइन किया गया था, जो कि वाचा से इनकार करने वाले राजत्व से बेहतर था।

एफ। 1 शमूएल 8 - राजा को "टेकर" के रूप में चेतावनी देना

अब मैं जो करना चाहता हूँ वह 1 सैमुअल 8 और फिर 1 सैमुअल 11-14 को देखना है। ब्रेक से पहले मुझे इसके बारे में थोड़ा और आगे जाने दीजिए। आइए 1 शमूएल 8 को देखें। यह वह अध्याय है जहां लोग एक राजा की मांग करते हैं। वे पद 5 में ऐसा करते हैं। वे शमूएल से कहते हैं, "तू बूढ़ा है, तेरे बेटे तेरे मार्गों पर नहीं चलते, और हम चाहते हैं कि एक राजा हमारा नेतृत्व करे जैसा

कि अन्य सभी राष्ट्र करते हैं।" यह बात शमूएल को अप्रसन्न करती है, पद्य 6. परन्तु पद 7-9 और 22 में यहोवा कहता है, "उन्हें एक राजा दो; वे जो कहते हैं उसे सुनो, उन्हें एक राजा दो।"

इसलिए मुझे लगता है कि मैं आपके हैंडआउट में कुछ पैराग्राफ छोड़ दूंगा। शमूएल को यहोवा के निर्देश दर्शाते हैं कि इस्राएल में राजत्व की स्थापना का समय आ गया है क्योंकि वह कहता है, "उन्हें एक राजा दो।" हालाँकि, वह श्लोक 9-10 में कहता है, "उन्हें गंभीरता से चेतावनी दो और उन्हें बताओ कि जो राजा उन पर शासन करेगा वह क्या करेगा।" एनआईवी अनुवाद में वह अभिव्यक्ति, "उन्हें बताएं कि जो राजा उन पर शासन करेगा वह क्या करेगा," का शाब्दिक अर्थ है, "उन्हें राजा के तरीके बताएं।" "राजा की रीति," या "जो राजा उन पर राज्य करेगा वह क्या करेगा," यह वह नहीं है जो इस्राएल के राजा को करना चाहिए, बल्कि वह है जो राजा अपने आस-पास के राष्ट्रों की तरह करेगा। और इस्राएल ने अन्य राष्ट्रों के समान एक राजा की माँग की थी।

जैसा कि आप श्लोक 11-17 में इस चेतावनी में आगे पढ़ते हैं, आप पाते हैं कि एक राजा अपने आस-पास के राष्ट्रों की तरह मूल रूप से "ले लेगा"। देखिए श्लोक 11 में क्या कहा गया है: "जो राजा तुम पर राज्य करेगा वह यह करेगा: वह तुम्हारे पुत्रों को ले लेगा और उन से अपने रथों और सेवकों की सेवा कराएगा।" श्लोक 12, "वह अपनी भूमि जोतने और अपनी फसल काटने के लिए कुछ लोगों को हज़ारों का सेनापति, पचासों का सेनापति बनाएगा।" श्लोक 13, "वह तेरी बेटियों को रसोइया बनाने के लिये ले जाएगा।" श्लोक 14, "वह तुम्हारे खेतों का सर्वोत्तम भाग ले लेगा।" श्लोक 15, "वह तुम्हारे अनाज का दसवाँ हिस्सा यानी तुम्हारी उपज लेगा।" श्लोक 16, "वह तुम्हारे सर्वोत्तम मवेशियों और गधों को अपने उपयोग के लिए ले लेगा।" श्लोक 17, "वह तुम्हारी उपज का दसवाँ हिस्सा लेगा।" इसलिए सरकार ने बहुत कुछ नहीं बदला है. वे कहीं भी और हर जगह ले सकते हैं, ले सकते हैं, ले सकते हैं, ले सकते हैं। आस-पास के राष्ट्रों की तरह राजा भी वास्तव में यही करेगा।

अब आपके हैंडआउट के पृष्ठ 3 के नीचे एक नोट है। 8:9-17 में राजा के तौर-तरीकों का वर्णन राज्य के तौर-तरीकों से भिन्न है। 10:25 में, राज्य का ढंग इस बात का वर्णन है कि एक सच्चा वाचा राजा कैसा होना चाहिए। जब शाऊल को चिट्ठी डालकर चुना गया, तो शमूएल ने राज्य के तरीके का वर्णन किया, और निस्संदेह वह विवरण ले, ले, ले जैसा नहीं था; यह व्यवस्थाविवरण 17

की तरह होगा जो वर्णन करता है कि एक राजा को क्या करना चाहिए।

लेकिन यही चेतावनी है और मैं शमूएल 8:11-17 में। चेतावनी अनभिज्ञ है, क्योंकि 8:19 को देखें। लोगों ने सुनने से इनकार कर दिया. “ तब हम सब अन्य राष्ट्रों के समान होंगे, हमारा नेतृत्व करने के लिए एक राजा होगा और वह हमारे आगे बढ़कर हमारी लड़ाई लड़ेगा। तो यह अनुरोध एक मांग बन जाता है: "हमारे ऊपर एक राजा होना चाहिए।" मुझे लगता है कि मुद्दा 8:20 में देखा गया है: "हम अन्य सभी राष्ट्रों की तरह बनना चाहते हैं।" इज़राइल ने ईश्वर के लोगों के रूप में अपनी विशिष्टता की अवधारणा खो दी है, और यही विशिष्टता उसके अस्तित्व का मूल कारण थी। उसे आस-पास के राष्ट्रों से अलग होना था, और यहोवा को उसका राजा बनना था।

केटी डमोंड द्वारा प्रतिलेखित
 टेड हिल्लेब्रांट द्वारा रफ संपादन
 एलिजाबेथ फिशर
 द्वारा अंतिम संपादन टेड हिल्लेब्रांट द्वारा पुनः सुनाया गया